शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक २० : नई दिल्ली : १६-२५ अगस्त २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी ६२, सर्व १४४ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पर्युषण का नवान्हिक कार्यक्रम प्रारंभ हो गया है। सुदूर क्षेत्रों से आए हजारों श्रद्धालु भक्तिभाव से पर्युषण की आराधना कर रहे हैं। मौसम पूरी तरह से अनुकूल और सुहावना है। दिन या रात्रि में कई बार तेज अथवा हल्की वर्षा हो जाती है।

समझो पापों को-७

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--**'माणं मद्दवया जिणे'**--मृदुता से मान को जीतो। आदमी के भीतर अहंकार की वृत्ति होती है। अहंकार की वृत्ति साधना के क्षेत्र में बाधक होती है। न केवल साधना के क्षेत्र में, अपितु व्यावहारिक जगत में भी अहंकार शोभायमान नहीं होता। अनादिकाल से हमारे भीतर अहंकार के संस्कार विद्यमान हैं। आदमी दूसरों पर अधिकार जमाना चाहता है। स्वयं किसी के अधीन रहना नहीं चाहता, बल्कि दूसरों को अधीन रखना चाहता है। इस वृत्ति को कैसे समाप्त किया जाए, यह एक प्रश्न है।

शास्त्रकार ने उपाय बताया कि मार्दव के द्वारा मान को जीतना चाहिए। अहंकार विनय का नाश करनेवाला होता है तो विनय अहंकार का नाश करनेवाला होता है। विद्यार्थी में विनय नहीं है तो ज्ञानाराधना में कुछ बाधा पैदा हो सकती है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है--

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।।

गुरु से ज्ञान प्राप्त करना है तो तीन बातों पर ध्यान देना चाहिए। सबसे पहले गुरु को प्रणाम करो, गुरु के सामने झुको। दूसरी बात--जिज्ञासा करो। जिज्ञासा ज्ञान उत्पन्न करनेवाली होती है। तीसरा उपाय बताया गया--सेवा करो, तब तत्त्वदर्शी ज्ञानी पुरुष तुम्हें तत्त्व का उपदेश देंगे। संस्कृत वाङ्मय में कहा गया है--

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते,आयुर्विद्यायशोबलम्।।

जो व्यक्ति अभिवादनशील होता है, सदैव वृद्धों की उपासना करनेवाला होता है, उसमें चार बातों का विकास होता है--आयुष्य की वृद्धि, विद्या की वृद्धि, यश की वृद्धि और बल की वृद्धि। कहा गया है--**लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर।'** जो व्यक्ति लाघव को स्वीकार करता है, झुकता है, विनम्र होता है, उसको प्रभुता, महानता, स्वामित्व की प्राप्ति होती है और जो स्वयं को बड़ा और श्रेष्ठ दिखाने का प्रयास करता है, उससे प्रभुता दूर चली जाती है।

ज्ञान प्राप्ति के लिए विनम्रता का व्यवहार अपेक्षित है। आदमी को ज्ञान मिल जाए तो उसका अहंकार नहीं करना चाहिए। न जाति का अहंकार, न कुल का अहंकार, न बल-वैभव का अहंकार, न धन-संपत्ति का अहंकार, न सत्ता का अहंकार, न तपस्या का अहंकार। अहंकार का भाव मन में आते ही उन सब

चीजों का क्षरण शुरू हो जाता है, जिनके कारण व्यक्ति विशिष्ट बना होता है। लेकिन यह व्यक्ति के भीतर मौजूद विजातीय तत्त्वों का प्रभाव है कि आदमी अहंकार में चला जाता है। रूप का भी अहंकार हो जाता है। रूपवान होना एक बात है, किन्तु गुणवत्ता न हो तो कोरा रूप किस काम का? इस संदर्भ में एक कथा है--

राजा अपने आसन पर आसीन था। पास में उसका मंत्री भी उपस्थित था। बातचीत के प्रसंग में राजा ने कहा--'मुझे सौन्दर्य अपनी ओर आकर्षित करता है। विद्रूपता और असौन्दर्य की ओर देखने का मेरा मन ही नहीं होता। कितना अच्छा होता, अगर सभी रूपवान होते।' मंत्री अनुभवी, बुद्धिमान और गंभीर स्वभाव का था। उसने कहा--'राजन! सौन्दर्य तो सभी को प्रिय होता है, इसलिए उसका अपना महत्त्व है, किन्तु उससे ज्यादा गुणों का महत्त्व है। कोई कितना ही रूपवान हो, अगर उसमें गुण नहीं तो उसका रूप व्यर्थ है।' राजा ने मंत्री की बात का प्रतिवाद किया और अपने कथन के पक्ष में कई तर्क दिए। मंत्री ने कहा--'आपका कथन आपकी दृष्टि से यथार्थ हो सकता है, किन्तु मैंने जो कहा, उसकी सचाई भी किसी दिन आप देख लेंगे।'

किसी अन्य दिन राजा को प्यास लगी। उनके संकेत पर अनुचर स्वर्ण पात्र में पानी लेकर उपस्थित हुआ। राजा ने पानी की पहली घूंट ली और अरुचि से मंत्री की ओर देखकर कहा--'पानी ठंडा नहीं है।' मंत्री ने सेवक से मिट्टी के घड़े का पानी मंगवाया। उस मृत्तिका पात्र का जल पीकर राजा ने तृप्ति की अनुभूति की और कहा--'आश्चर्य है! दो पात्रों के पानी में इतना अन्तर?' मंत्री ने कहा--'राजन! आपको तो सौन्दर्य प्रिय है। कलात्मक स्वर्ण पात्र के सामने मिट्टी के पात्र का क्या सौन्दर्य। फिर आपको स्वर्ण पात्र वाले जल की अपेक्षा मिट्टी के पात्र वाला जल क्यों अच्छा लगा?' बात राजा की समझ में आ गई कि बाह्य सौन्दर्य गौण होता है, आन्तरिक सौन्दर्य मुख्य होता है। उसके बिना बाह्य सुन्दरता का कोई बहुत महत्त्व नहीं। मूल बात है गुणवत्ता और उपयोगिता होनी चाहिए। अहंकार के बजाय आदमी अपनी योग्यता को बढ़ाने का प्रयास करे। कहा गया है--**'स्वयमायाति सम्पदः।'**

अगर पात्रता है तो कई बार संपदा स्वयं व्यक्ति के पास आ जाती है। अगर योग्यता नहीं है और संपदा आ गई तो उसके टिकने और उसके सही उपयोग में सन्देह है।

अहंकार धन का भी होता है। आदमी धनान्ध बन जाता है। मैं धनवान लोगों को परामर्श देता हूं कि आपके पास धन है तो उसका अहंकार न करें। उसके प्रति ज्यादा आसक्ति और मोह भी न करें, क्योंकि उसका स्वभाव अस्थिर है, वह कभी भी अपना स्थान बदल सकता है। भाग्य से या पुरुषार्थ से आपको धन-संपदा मिली है तो उसका दुरुपयोग न करें।

अहंकार परमानंद में बाधक है। संस्कृत साहित्य में कहा गया है--

अहंकारो धियं ब्रूते, नैनं सुप्तं प्रबोधय।
उदिते परमानन्दे, न त्वं नाऽहं न वै जगत्।।

अहंकार ने बुद्धि से कहा--'इस परमानन्द को तुम जागने मत देना। परमानंद उदित हो गया तो मैं भी नहीं रह पाऊंगा, तुम भी नहीं रह पाओगी और यह माया का जगत भी नहीं रह पाएगा।

अहंकार के बारे में यह भी कहा गया है--

अभिमानं सुरापानं, गौरव घोर रौरवम्।
प्रतिष्ठा शूकरी विष्ठा, त्रयं त्यक्त्वा सुखी भवेत्।।

अभिमान मदिरापान के समान है। गौरव यानी गर्व भयंकर नरक के समान है। प्रतिष्ठा की कामना सूअरी की विष्ठा के समान है। तीनों को छोड़कर आदमी सुखी बन सकता है। अहंकार तो व्यर्थ चीज है। व्यावहारिक जीवन में विनय का प्रयोग जिसके सामने जितना उचित हो, उतना करना भी चाहिए।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी गंगाशहर में प्रवास कर रहे थे। संभवतः महाप्रयाण से कुछ दिन पहले की बात है। आचार्य महाप्रज्ञजी गुरुदेव के पास पधारे और विनयभाव से नीचे बैठकर वंदना की। गुरुदेव ने कहा--'तुम भी कैसे आचार्य बने हो। एक छोटे मुनि की तरह बैठकर वंदना करते हो।' आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा--'गुरुदेव! औरों के लिए मैं आचार्य हूं, पर आपके लिए तो मैं शिष्य ही हूं।

साधु मिलें और आप हाथ न जोड़ें तो यह विनय का अतिक्रमण है। अहंकार विकास में बाधा पैदा करने वाला तत्त्व है, इसलिए इसे जितनी जल्दी हो सके, छोड़ देना चाहिए।

शिष्य गुरु के पास गया और बोला--'गुरुदेव! आपने मुझे इतना ज्ञान दिया है तो दक्षिणास्वरूप मैं भी आपको कुछ देना चाहता हूं। आदेश करें, मैं आपको क्या दूं?'

गुरु ने कहा--'वत्स! कोई बेकार की चीज तुम्हारे पास हो तो वह मुझे दे दो।' शिष्य सोच में पड़ गया--व्यर्थ चीज कौन-सी हो सकती है? कुछ सोचकर उसने अपनी दोनों हथेली में मिट्टी भरी और कहा गुरुदेव! यह मिट्टी व्यर्थ की चीज है, आपके आदेशानुसार इसे ही मैं आपको अर्पण करता हूं।'

गुरु ने कहा--'यह तो बहुत कीमती चीज है। यह नव निर्माण का साधन है। एक नन्हें बीज को यह अपनी गोद में आश्रय देकर उसे अंकुरित कर पोषण देती है और शतशाखी वृक्ष या लहलहाती फसल में रूपान्तरित कर जीविका का साधन उपलब्ध कराती है। इससे ही नाना प्रकार के पात्रों का निर्माण होता है। कितने ही रूपों में आवास निर्माण के काम आती है। तुमने इसे व्यर्थ क्यों समझ लिया?'

शिष्य ने पास में पड़ी राख को मुट्ठी में लेकर कहा--'तो फिर आप इसे ग्रहण करें।' गुरु ने कहा--'गृहस्थ तो राख का कई तरह से उपयोग करते ही हैं, जैन मुनि भी केश लुंचन के समय इसका उपयोग करते हैं। यह भी उपयोगी चीज है।' बहुत सोच-विचार के बाद शिष्य ने कहा--'न चाहने पर भी पता नहीं कैसे मुझमें ज्ञान का अहंकार आ गया है। आप इस अहंकार को मुझसे लेकर मेरे पर अनुग्रह करें।' गुरु ने कहा--'यथार्थ कहा तुमने। अहंकार व्यर्थ चीज है। इसे मुझे सौंप कर तुम हल्के बन जाओ।'

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

प्रतिपक्ष का प्रयोग करें

८ अगस्त। आज ब्रह्मबेला में वर्षा का क्रम प्रारंभ हो गया। लम्बे अन्तराल के पश्चात होने वाली इस तेज बारिस से वातावरण में शीतलता व्याप गई।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति के भीतर अनेक प्रकार के भाव विद्यमान रहते हैं। जैसे हमारे भाव होते हैं, सामान्यतया वैसी ही अभिव्यक्ति हमारे द्वारा हो जाती है। जीवन विज्ञान में भावात्मक विकास के लिए प्रयोग निर्दिष्ट किए गए हैं। विकृत मनोभाव व्यक्ति को अपराध में ले जा सकते हैं। राग और द्वेष के भाव विकृत कहलाते हैं। इन्हें बलवान नहीं, दुर्बल बनाना व्यक्ति का लक्ष्य रहना चाहिए। व्यक्ति चिंतन करे कि मुझमें क्या-क्या दुर्बलताएं हैं। इसके पश्चात उन्हें छोड़ने का अभ्यास करे। चिंतन, संकल्प और अभ्यास के द्वारा दुर्गुणों को दुर्बल बनाया जा सकता है।'

जीवन विज्ञान के गुणात्मक विकास को सहायक बताते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'विद्या संस्थानों के द्वारा विद्यार्थियों में लौकिक ज्ञान विकसित करने का प्रयत्न किया जाता है, किन्तु उसके साथ उनमें अलौकिक ज्ञान भी वृद्धिंगत होना चाहिए। विद्यार्थियों में संकल्पशक्ति के साथ सहिष्णुता का विकास भी होना चाहिए। जीवन विज्ञान बालपीढ़ी के गुणात्मक और भावात्मक विकास में सहायक बन सकता है। भावात्मक और गुणात्मक विकास होने पर व्यक्ति अर्हता संपन्न बन जाता है। प्रवचन के पश्चात पूज्यवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान का सरस शैली में वाचन किया।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। मुनि मदनकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए। बोरावड़ पदार्पण की प्रार्थना के साथ समुपस्थित बोरावड़ के संघ की ओर से वहां के तेरापंथ महिला मंडल ने गीत के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी।

श्रुतसंपन्न ही नहीं, शीलसंपन्न भी बनें

६ अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान जीवन विज्ञान व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 'मूल्यों का विकास' विषय का विवेचन करते हुए परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सज्जन व्यक्ति में गुण होते हैं। सद्गुणों को आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए। किसी अन्य व्यक्ति की विशेषताओं को देखकर व्यक्ति यह चिंतन करे कि ये गुण मुझमें हैं या नहीं? यदि नहीं है तो मैं उन्हें आत्मसात् करने का प्रयास करूं। विद्यार्थी में शिक्षा के साथ मूल्यों का विकास भी अपेक्षित है। विद्यालयों में मूल्याधारित शिक्षा चलनी चाहिए। विद्यार्थी में ज्ञानात्मक विकास होना चाहिए। केवल सूचनात्मक ज्ञान ही विकसित न हो, उसमें संस्कारों का निर्माण भी होना चाहिए। अणुव्रत के द्वारा गुणात्मक विकास हो सकता है। विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए भी अणुव्रत आचार संहिता निर्दिष्ट है। यदि वे इसे स्वीकार कर लें तो जीवन में मूल्यों का विकास संभव है। विद्यार्थी श्रुतसंपन्न ही नहीं, शीलसंपन्न भी बनें।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'तीन बातें विद्यार्थी के लिए महत्त्वपूर्ण होती हैं। यदि वे जीवन में आ जाती हैं तो शिक्षा के साथ मूल्यों का समावेश भी हो सकता है। वे तीन बातें हैं--

१. मैत्री भावना का विकास-विद्यार्थी बात-बात में आवेश और कलह कर लेता है। अगर वह मैत्री करना नहीं जानता तो उसके जीवन में यह एक बड़ी कमी रह जाती है। मैत्री एक मूल्य है। छोटी-छोटी बातों पर कलह करना महानता का विरोधी तत्त्व है। संकीर्णता लघु चिंतन वाले व्यक्ति का लक्षण है। यदि उदारता हो तो विद्यार्थी जीवन में मूल्यों का विकास हो सकता है। विद्यार्थी निर्मल प्रेम करना सीखें।'

२. ईमानदारी का विकास-विद्यार्थी में यह निष्ठा रहे कि मैं अपने जीवन में यथासंभव ईमानदारी का पालन करूंगा। वह परीक्षा में अवैध साधनों का सहारा न ले। विद्यार्थियों में संस्कार भरने का प्रयास किया जाए तो उसका कुछ प्रभाव उसके जीवन में दिखाई दे सकेगा। शिक्षक स्वयं नैतिकता के प्रति आस्थावान रहते हुए विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य विकसित करने का प्रयास करें।

३. संयम का विकास-विद्यार्थियों में संयम का विकास भी अपेक्षित है। उनका जीवन नशामुक्त रहना चाहिए। उन्हें ऐसी प्रेरणा दी जाए और संकल्प कराया जाए कि वे नशामुक्त रहेंगे।

विद्या अपने आप में वैभव है, किन्तु उसके साथ मूल्य भी संपृक्त रहें तो शिक्षा में अधिक निखार आ सकता है। भौतिकता के वातावरण में जीनेवाले बच्चों को आध्यात्मिकता का प्रशिक्षण भी मिलता रहे तो असत्संस्कारों को काफी हद तक टाला जा सकता है।' प्रवचन के उपरान्त आचार्यवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने कायोत्सर्ग की महत्ता को विवेचित किया।

श्री बाबूलाल ढेलड़िया (बालोतरा) की १०८ की तपस्या के प्रसंग में परिजनों की ओर से लोकेश ढेलड़िया, महावीर ढेलड़िया, सुभाष ढेलड़िया एवं श्री जीवनमल ढेलड़िया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। परिवार की महिलाओं ने गीत का संगान किया। पूज्यवर द्वारा 'तपोनिष्ठ श्रावक' संबोधन से संबोधित श्री बाबूलाल ढेलड़िया ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त करते हुए पूज्यवर से क्रोध और कटु शब्दों के प्रयोग के परिहार का संकल्प स्वीकार किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'बाबूलालजी ढेलड़िया ने प्रलम्ब तप का क्रम प्रस्तुत किया है। यह अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण बात है। इतनी बड़ी तपस्या बहुत बड़ी बात हो जाती है। इन्होंने गुस्सा न करने और कटु शब्द न बोलने का संकल्प स्वीकार किया, यह साधना भी कम बड़ी बात नहीं है। इनकी साधना आगे से आगे बढ़ती रहे।'

जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर परिसंपन्न

१० अगस्त। परम पावन आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में जीवन विज्ञान अकादमी जैन विश्वभारती, लाडनूं द्वारा समायोजित पंचदिवसीय जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में परिसंपन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में जीवनविज्ञान सहप्रभारी मुनि नीरजकुमारजी ने गीत का संगान किया। शिविरार्थी डॉ.कमला जैन, जितेन्द्र मुराली, लतिका डोंगरे, मीठालाल बरलोटा आदि ने अपने अनुभवों को प्रस्तुति दी। जीवन विज्ञान अकादमी के सहायक निदेशक श्री हनुमान शर्मा ने प्रशिक्षक परीक्षा के परिणामों की घोषणा की। जीवन विज्ञान प्रभारी शासनश्री मुनि किशनलालजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--' अहिंसा वह भगवती है जो प्राणियों का कल्याण करने वाली है। व्यक्ति के भीतर हिंसा और अहिंसा, दोनों प्रकार के भाव विद्यमान हैं। मोहनीय कर्म के क्षयोपशम के बिना अहिंसा की चेतना नहीं जाग सकती। प्रत्येक प्राणी के भीतर यत्किंचित रूप में अमोह की चेतना भी होती है। व्यक्ति जितना मोह से व्याकुल होता है, मोक्ष से दूर होता चला जाता है। अहिंसक चेतना को विकसित करने के लिए मोह को प्रतनु बनाना आवश्यक है।' पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'जीवन विज्ञान विद्यार्थियों में संस्कार भरने का एक अच्छा और सार्थक उपक्रम है। अभिभावक, शिक्षक और विद्यार्थी--तीनों के योग से जीवन विज्ञान अधिक सफलता प्राप्त कर सकता है।' पूज्यवर ने कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीकृष्ण का उल्लेख करते हुए श्रीमद्भगवद्‌गीता के आध्यात्मिक उपदेश को हृदयंगम करने की प्रेरणा प्रदान की।

आचार्यवर के प्रेरक प्रवचन के पश्चात् जसोल निवासिनी श्रीमती उषा बोहरा के मासखमण तप के प्रसंग में उनके परिवार की ओर से बहनों ने गीत का संगान किया तथा प्रणव बोहरा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। तेरापंथ कन्यामंडल द्वारा प्रारब्ध पंचरंगी तप का उपक्रम आज सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

पंचदिवसीय जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर में बाईस व्यक्ति संभागी बने। प्रशिक्षण के उपरान्त आयोजित परीक्षा का परिणाम शत-प्रतिशत रहा। शिविरार्थियों को पूज्यप्रवर के पावन पाथेय के अतिरिक्त संभागियों को जीवन विज्ञान प्रभारी शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, जीवन विज्ञान सहप्रभारी मुनि नीरजकुमारजी, श्री हनुमान शर्मा, श्री महेन्द्र कुमावत, श्री गिरजाशंकर दुबे और श्रीमती कमला जैन से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

मेधावी छात्र सम्मान समारोह एवं कार्यशाला

११ अगस्त। परमाराध्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज से जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा संचालित मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना के अन्तर्गत ७वां वार्षिक सम्मान समारोह और कार्यशाला का द्विदिवसीय उपक्रम प्रारंभ हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। परियोजना के नियोजक श्री बजरंग बोथरा एवं संयोजक श्री के.सी.जैन ने परियोजना की अवगति देते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए। चयनित आई.ए.एस. अधिकारी श्री दीपक सिंगला ने अपने विचारों को प्रस्तुति दी। बालक मुदित बडाला ने 'महाश्रमण अभ्यर्थना' नामक अपनी लघु कृति पूज्यवर को उपहृत की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'प्रज्ञा समीक्षा करनेवाली होती है। जिस आदमी के पास प्रतिभा, विवेचनशक्ति और तर्कशक्ति नहीं होती, वह समीक्षा भी कितनी कर पाएगा? व्यक्ति अपने ज्ञान के आधार पर ही किसी चीज की समीक्षा कर सकता है। जिनके पास ज्ञान का बल नहीं होता, वे व्यक्ति दुर्बल होते हैं। ज्ञान का अभाव जीवन का बहुत बड़ा अभिशाप है। ज्ञान प्रकाश करने वाला होता है। जीवन में ज्ञान का प्रकाश रहे तो व्यक्ति विकास के सोपान तय कर सकता है।

ज्ञान सम्यक् नहीं है तो व्यक्ति दिशाहीन होकर भटक सकता है। ज्ञान को पवित्रतम माना गया है, अतः व्यक्ति अधिकाधिक ज्ञानार्जन का प्रयत्न करे।'

मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने कहा--'मेधावी होना अपने आप में भाग्य की बात है। कुछ-कुछ विद्यार्थी ही विशिष्ट मेधासंपन्न होते हैं और वे अपनी प्रतिभा और क्षमता के द्वारा कुछ कर भी सकते हैं। उन्हें यदि प्रोत्साहन और सहयोग मिलता रहे तो वे अपनी लक्षित दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। तेरापंथ समाज में अनेक ऐसे व्यक्ति हैं, जो ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़े हैं। तेरापंथी महासभा द्वारा इस परियोजना के माध्यम से तेरापंथ समाज की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित और सम्मानित किया जाता है। यह एक उपयोगी उपक्रम है। इसके माध्यम से मेधावी छात्र-छात्राओं को वर्ष में एक बार संतों के संपर्क में आने का मौका मिल जाता है। सभी मेधावी छात्र-छात्राएं ज्ञानार्जन के साथ-साथ सुसंस्कार व सदाचार के पथ पर चलने का प्रयास करें, यही उनके लिए श्रेयस्कर होगा।'

मेधावी छात्र सम्मान समारोह एवं द्विदिवसीय कार्यशाला में ३२२ छात्र-छात्राएं संभागी बने। संभागियों को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर से पावन संबोध प्राप्त हुआ। पूज्यवर ने उन्हें जैनदर्शन का प्रारंभिक प्रशिक्षण प्रदान करते हुए गुरुधारणा भी करवाई। शासनश्री मुनि किशनलालजी, फ्लिपकार्ड के डायरेक्टर श्री सुजीतकुमार, श्री राज सेठिया, आई.ए.एस. श्री दीपक सिंगला, श्री के.एल.जैन एवं परियोजना के संयोजक श्री के.सी. जैन से भी संभागियों को विविध विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। विभिन्न श्रेणियों के कुल १३७ छात्र-छात्राओं को 'गणाधिपति तुलसी स्वर्णपदक', 'आचार्य महाप्रज्ञ स्वर्णपदक', 'आचार्य महाश्रमण स्वर्णपदक' एवं 'जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा रजतपदक' तथा सभी संभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

सन २००६ से प्रारंभ इस परियोजना के अन्तर्गत अब तक दो करोड़ से कुछ अधिक राशि छात्रवृत्ति के रूप में वितरित की जा चुकी है। परियोजना के संयोजक श्री के.सी.जैन, नियोजक श्री बजरंग बोथरा, सदस्य सचिव श्री हरीश जैन के साथ श्री प्रदीप संचेती, श्री पुष्प जैन, श्रीमती नम्रता जैन, श्री गौरव राखेचा, श्रीमती मनीषा राखेचा आदि अनेक सदस्य सक्रिय रहे।

छिपकर भी गलत कार्य में संपृक्त न बनें

१२ अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम से पूर्व मेधावी छात्र-छात्राओं को पूज्य आचार्यवर ने दिशाबोध प्रदान करते हुए कहा--'सबको नौ तत्त्वों की जानकारी रहनी चाहिए।' आचार्यवर ने छात्र-छात्राओं को सम्यक्त्व दीक्षा प्रदान की तथा बारह महीने तक प्रतिमाह एक-एक सामायिक करने का संकल्प करवाया। उसके बाद मुनि जिनेशकुमारजी ने सबको अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'मूल्य संस्कारों का' विषय पर अपना मंगल प्रवचन करते हुए कहा--'विद्या जीवन का वैभव है। इसका हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है। जीवन में पैसे का भी भौतिक महत्त्व होता है, लेकिन इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है संस्कार। मनुष्य के जीवन में सद्गुणों का सर्वाधिक महत्त्व है। सद्गुणी व्यक्ति दूसरों की भलाई करता है। वह स्वयं की आत्मा को निर्मल रखता है। गुरु से प्राप्त शिक्षा जीवन की निधि है। गुरु से जीवन में यथोचित संस्कारों को भरने का प्रयास किया जाता है। लज्जा भी एक संस्कार है। व्यक्ति में गलत कार्य करने का संकोच हो। गुरु से भी लज्जा व संकोच रखना चाहिए। उनसे बात करने का भी विवेक हो। व्यक्ति में अनुकंपा की चेतना हो, वह निष्ठुर न हो। उसमें संयम की चेतना जागे।'

मेधावी छात्र-छात्राओं की ओर उन्मुख होते हुए आचार्यवर ने कहा--'विद्यार्थियों के लिए संयम आवश्यक है। इससे जीवन सार्थक हो जाता है। बालपीढ़ी में यदि सत्संस्कारों का बीजारोपण हो जाए तो उनका जीवन स्वस्थ एवं प्रसन्न बन जाता है। विद्यार्थियों में ऐसे संस्कार घनीभूत बनें, जिससे वे छिपकर भी गलत कार्य में संपृक्त न बनें। उनके जीवन में नैतिकता का विकास हो। सत्संस्कारों के बीज हर व्यक्ति के भीतर

विद्यमान हैं। उन्हें पोषण मिले तो एक दिन वे बीज वटवृक्ष का रूप ले लेते हैं। हर व्यक्ति के जीवन में साधना का विकास हो।' दो दिन बाद प्रारंभ हो रहे पर्युषण पर्व के संदर्भ में आचार्यवर ने धर्माराधना की विशेष प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

आज के कार्यक्रम में जोधपुर हाईकोर्ट के न्यायाधीश श्री संदीप मेहता, राजस्थान लॉ यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार व जोधपुर विकास प्राधिकरण के कमिश्नर श्री रतन लाहोटी, राजस्थान के मुख्यमंत्री के अतिरिक्त निजी सचिव श्री प्रदीप बोरड़, प्रतापगढ़ के उपजिला कलेक्टर श्री ओ.पी.जैन, मुम्बई के एक्साइज कमिश्नर श्री अशोक कोठारी (जसोल) उपस्थित थे। श्री लाहोटी ने कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किए। मेधावी छात्र परियोजना के संयोजक आयकर आयुक्त श्री के.सी.जैन ने परियोजना की अवगति दी। पूज्य आचार्यवर ने न्याय व प्रशासन के क्षेत्र को सेवा का क्षेत्र बताते हुए सर्वत्र नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा पर बल दिया। मुनि विजयकुमारजी ने प्रासंगिक गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में छह मासखमण, तेरह वर्षीतप और इक्कीस तक की लड़ी करने वाली श्रीमती सुशीला बोहरा (पीपली-चेन्नई) ने उनतीस की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। सुश्री विभा बोहरा ने तप के संदर्भ में अपने विचार रखे। दो मासखमण कर चुकी श्रीमती प्रमिला सुन्देचा (शेखावासवाला) ने सत्ताईस की तपस्या का संकल्प स्वीकार किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

आवश्यक है मितभाषिता का अभ्यास

१३ अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'वाणी की शक्ति हर किसी को संप्राप्त नहीं होती। जबान पर सदैव लगाम रहे। दूसरे को कष्टानूभूति हो, ऐसी भाषा बोलने से बचना चाहिए। कटु व मृषा संभाषण का परिहार भी वाणी का संयम है। मितभाषिता का अभ्यास बहुत आवश्यक है, अन्यथा व्यक्ति वाचाल बन जाता है। वाचाल व्यक्ति को नीचा स्थान मिलता है, जबकि विवेकपूर्वक बोलने वाले को सम्मानजनक स्थान प्राप्त होता है। विवेकी सोच कर बोलता है। बोलने से पहले व्यक्ति यह सोचे कि मेरे द्वारा कही गई बात का दूसरों पर क्या असर पड़ेगा? इससे वाणी की महत्ता बनी रहती है। हर व्यक्ति के जीवन में मृदुभाषिता, मितभाषिता व यथार्थभाषिता का अभ्यास पुष्ट बनना चाहिए। अनावश्यक न बोलना सबसे बड़ा मौन है।' कल से प्रारंभ हो रहे पर्युषण पर्व के संदर्भ में आचार्यवर ने उपस्थित जनमेदिनी को अपना समय धर्म-ध्यान में नियोजित करने की प्रेरणा दी। इसके साथ आचार्यवर ने नवरंगी, तेला अनुष्ठान के परिप्रेक्ष्य में तपस्या करने की बलवती प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

मुनि पृथ्वीराजजी व उनकी संसारपक्षीय सुपुत्री साध्वी तरुणयशाजी के चौदह की तपस्या के संदर्भ में उनके संसारपक्षीय संकलेचा परिवार ने तप महिमा पर गीत प्रस्तुत किया। साध्वी ऋजुयशाजी आदि साध्वियों ने भी गीत का संगान किया। साध्वी तरुणयशाजी ने पन्द्रह व मुनि पृथ्वीराजजी ने इक्कीस की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

भंसाली परिवार के श्री अनिल भंसाली ने आज छब्बीस तथा श्रीमती जयश्री भंसाली ने पच्चीस दिन की तपस्या का पूज्यप्रवर से प्रत्याख्यान किया। दोनों तपस्वी अठाई आदि कई तपस्याएं कर चुके हैं। उनकी तप अनुमोदना में परिवार की बहनों ने गीत प्रस्तुत किया। श्री शांतिलाल भंसाली, श्री हितेश भंसाली एवं सतीश भंसाली ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किए। पांच वर्षीतप, चौबीस तक की लड़ी व सिद्धितप कर चुकी श्रीमती शान्तादेवी लूंकड़ ने उनतीस की तपस्या का संकल्प स्वीकार किया। उनके उनचालीस की तपस्या करने का विचार है। लूंकड़ परिवार के गीत संगान के साथ सुश्री प्रतीक्षा लूंकड़ ने तपस्विनी बहन का परिचय दिया। पूना से समागत वर्षीतप व अन्य तप कर चुकी श्रीमती कंचन प्रकाश भंडारी ने इक्कीस की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

पचपदरा के मुमुक्षु रौनक संकलेचा ने अपने वक्तव्य में शीघ्रातिशीघ्र दीक्षा प्रदान करने की भावपूर्ण प्रार्थना की। परिजनों की अनुमति प्राप्त कर आचार्यवर ने अत्यन्त अनुग्रह कर मुमुक्षु रौनक को ५ नवम्बर २०१२ को मुनि दीक्षा प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान की। पचपदरा निवासी श्री डूंगरचन्द चोपड़ा की सुपुत्रीद्वय--अनुप्रेक्षा व मोनिका तथा श्री जवेरीलाल रांका की सुपुत्री व साध्वी महिमाश्रीजी की संसारपक्षीया बहन निकिता ने कार्यक्रम में मंगलपाठ का श्रवण कर पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश किया।

नाकोड़ा जैन तीर्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अमृतलाल जैन व अन्य पदाधिकारियों ने आज पूज्यवर के दर्शन किए और नाकोड़ा पधारने का निवेदन किया। आचार्यवर ने कृपा करके चतुर्मास समाप्ति के बाद २६ नवम्बर को जसोल से नाकोड़ा पधारने की स्वीकृति प्रदान की।

आज मध्याह्न में ऑल इंडिया सर्राफा एसोसियेशन के अध्यक्ष एवं लायंस क्लब के सात राज्यों के गवर्नर श्री फतेहचन्द रांका तथा एडवोकेट श्री एस.के.जैन ने पूज्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

पर्युषण पर्व का प्रारंभ

१४ अगस्त। अध्यात्म चेतना के जागरण का प्रमुख पर्व पर्युषण का प्रारंभ। नवान्हिक कार्यक्रम के अन्तर्गत आज खाद्य संयम दिवस। पूज्यवर के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी मुकुलयशाजी ने पर्युषण तथा साध्वी मार्दवयशाजी ने खाद्य संयम पर गीत का संगान किया। मुनि मदनकुमारजी एवं साध्वी सरस्वतीजी के विषयबद्ध वक्तव्य हुए।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'पर्युषण उपासना की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण अवसर है। धार्मिक व्यक्ति बाह्य प्रवृत्तियों से स्वयं को उपरत रखकर संयम की आराधना करने का प्रयास करता है। धर्म के दो रूप हैं--संवर और निर्जरा। संवर की साधना कोई सामान्य साधना नहीं है। इससे मोक्ष सन्निकट होने लग जाता है। संवर की साधना तभी संभव है, जब सम्यक्त्व का संस्पर्श होता है। सम्यक्त्व के बिना की जाने वाली क्रिया का लाभ स्वल्प व सम्यक्त्वयुक्त क्रिया का महान लाभ होता है। सभी का तत्त्वज्ञान इतना अवश्य हो जिससे हमारा सम्यक्त्व प्रशस्त रहे।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'तीर्थंकर हमारी संस्कृति के मूल आधार हैं। तीर्थंकरों की परंपरा में भगवान महावीर चौबीसवें व अन्तिम तीर्थंकर हैं। भारत ऐसा देश है, जहां पर्वों और त्यौहारों का बहुत महत्त्व रहा है। लौकिक एवं लोकोत्तर अनेक पर्व हैं। आध्यात्मिक पर्वों की शृंखला में भाद्रपद मास पर्वों का मास है। पर्युषण इसी माह आने वाला जैन धर्म का महान पर्व है। यह पंचाचार की आराधना का पर्व है। वैसे इस पर्व की आराधना अनेक प्रकार से होती है। इस अवसर पर धार्मिक व्यक्ति यह चिंतन करे कि ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप का विकास कैसे हो तथा कैसे आचार की निर्मलता बढ़े?

वर्षावास, पर्यवसन, प्रथम समवसरण आदि पर्युषण के आठ पर्यायवाची नामों की मीमांसा करते हुए महाश्रमणीजी ने कहा--'पर्युषण पर्व का मुख्य संबंध साधुओं के साथ रहा है। वर्षावास प्रवास में साधु एक स्थान पर रहकर साधना में अपने समय का अधिकतम नियोजन करते हैं। इस आध्यात्मिक पर्व पर हम अन्य सभी कार्यों को गौण कर अपनी आत्मा के निकट रहें। खाद्य संयम, वाणी संयम जैसे छोटे-छोटे प्रयोगों से अपनी आत्मा को भावित करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हम सब नवान्हिक पर्युषण पर्व की आराधना में संलग्न बने हैं। पर्युषण वह समय है, जब सामूहिक रूप से सघन आराधना की जाती है। इन दिनों कोई तड़क-भड़क नहीं, अध्यात्ममय माहौल देखने को मिलता है। इस दुनिया में एक ऐसी पुनीत आत्मा ने जन्म लिया, जिसने अपनी साधना और आत्मा की पवित्रता के द्वारा परम पद को प्राप्त किया। हृदय सम्राट भगवान महावीर इस धरती पर जन्मे, तप तपा, साधना की, केवलज्ञान को प्राप्त किया, धर्मोपदेश दिया और एक दिन देह को छोड़कर अदेह सिद्धात्मा बन गए। इसकी पृष्ठभूमि में इस जन्म की साधना

ही नहीं, अनेक जन्मों की साधना कारक बनी है।'

जैनदर्शन के चार स्तंभ--आत्मवाद, लोकवाद, कर्मवाद, क्रियावाद की चर्चा करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'आत्मवाद का सिद्धान्त जैनदर्शन द्वारा सम्मत है। आत्मा का त्रैकालिक अस्तित्व है। आत्मा है, मोक्ष है तो अध्यात्म साधना भी अपेक्षित है। हमारी आत्मा एक जन्म से दूसरे जन्म में भ्रमण कर रही है। आत्मा अमूर्त है, चेतनास्वरूप है, उपयोग लक्षण वाली है। आत्मवाद अध्यात्मवाद से जुड़ा हुआ है।' आचार्यवर ने चारों स्तंभों का विस्तार से विवेचन किया।

पर्युषण आरंभ के साथ श्रीमज्जयाचार्य के महाप्रयाण दिवस की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'विषेष आगमज्ञ के रूप में हम जयाचार्य का दर्शन करते हैं। उनमें कितना ज्ञान था। वे ज्ञान के भंडार थे। मैं उन्हें तत्त्ववेत्ता आचार्य के रूप में देखता हूं। जैन शासन में ऐसे आचार्य कम मिलेंगे, जिन्होंने शोधपूर्वक साढ़े तीन लाख पद्यों की रचना की हो। यह उनकी विशिष्ट प्रज्ञा का सूचक है। तत्त्ववेत्ता के साथ वे विधिवेत्ता भी थे। उन्होंने विधि-मर्यादा की व्यवस्था दी। आचार्य भिक्षु ने विरोधों के बीच तेरापंथ का प्रारंभ किया और उसे आगे बढ़ाया। उसके बाद जयाचार्य ने उसे सजाने व संवारने का कार्य किया। उनकी अध्यात्म साधना कितनी प्रखर थी। उनका महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'चौबीसी' अध्यात्म के सूत्रों से ओतप्रोत है। वे बालावस्था में मुनि बने। उनकी स्थिरता व उनका विवेक उल्लेखनीय था। यह तो संघ का सौभाग्य है कि यहां बालमुनि होते रहते हैं। जयाचार्य ने शासन को आगे बढ़ाया। उनके जीवन से हमें प्रेरणा प्राप्त होती है। गुरुदेव तुलसी ने पूर्वाचार्यों के बारे में कितना लिखा है, कितने आख्यानों व गीतों की रचना कर विनय व श्रद्धा समर्पित की है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

कार्यक्रम में अनेक तपस्वी भाई-बहनों ने उपवास से लेकर पैंतालीस तक की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। आचार्यवर से तपस्वी भाई-बहन तप का प्रत्याख्यान कर रहे थे, उस समय मंच के आसपास तपस्वियों की लंबी कतार लग गई।

कर्मवाद कार्यशाला का समायोजन

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में तेयुप जसोल द्वारा १-१० अगस्त तक कर्मवाद कार्यशाला का समायोजन हुआ। इस दसदिवसीय कार्यशाला के अन्तिम दिन संभागियों को परम श्रद्धेय आचार्यवर का पावन पाथेय संप्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त मुनि उदितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी और मुनि अभिजितकुमारजी ने निर्धारित विषयों पर प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला में ४०५ व्यक्ति संभागी बने।

आचार्य महाप्रज्ञ ने दी मेरे जीवन को नई दिशा- डॉ. कलाम

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम द्वारा अपने जीवन के बदलाव के क्षणों पर लिखित नवीन पुस्तक है 'टर्निंग पोइंट'। हॉर्पर कोलिंस पब्लिशर्स इंडिया लि. द्वारा प्रकाशित इस कृति का लोकार्पण इसी वर्ष जून माह में हुआ। प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रस्तुत कृति अत्यन्त कम समय में विद्वज्जगत में लोकप्रिय सिद्ध हुई है। डॉ.कलाम ने इस पुस्तक में परमपूज्य युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ के साथ अपनी प्रथम मुलाकात का वर्णन करते हुए उसे अपने जीवन को एक नया अर्थ एवं दिशा देने वाला बताया है। उनके ये उद्‌गार आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति उनकी आन्तरिक श्रद्धा को अभिव्यक्त करते हैं। संपूर्ण धर्मसंघ के लिए यह गौरव का विषय है। उन्होंने इसी प्रकार के उद्‌गार हार्पर कोलिन्स पब्लिशर्स इंडिया लि. द्वारा प्रकाशित अपनी एक अन्य कृति 'एडवाइज़ आई एवर गॉट' में भी व्यक्त किए हैं। 'टर्निंग पोइंट' पुस्तक में व्यक्त उनके उद्‌गार के अंश इस प्रकार हैं--

''जब तक मैं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से नहीं मिला था, मेरे मन-मस्तिष्क में सदैव ये भावनाएं उमड़ती

थीं कि मैंने नाभिकीय शस्त्रों के क्षेत्र में जो भी कार्य किया है, वह सदाचार, दर्शन और प्राणिमात्र के विरुद्ध है। आचार्य महाप्रज्ञ ज्ञान के ऐसे स्रोत थे, जो अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक जीव की आत्मा को परिष्कृत कर देते थे। अक्टूबर १९९९ की मध्य रात्रि थी। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने मेरी ओर उन्मुख हो कुछ ऐसे शब्द कहे जो आज भी मेरे मस्तिष्क में गुंजायमान हैं। उन्होंने कहा--'कलाम ! आपके लिए यह लक्ष्य उन सभी कार्यों से भी महान है, जो आपने और आपकी टीम ने अभी तक किए हैं। आज विश्व में आणविक शस्त्रों का बहुसंख्या में प्रसरण हो रहा है। मैं आपको केवल आपको सन्देश देता हूं कि आप शांति से परिपूर्ण एक ऐसे तंत्र का विकास करेंगे, जहां पर ये सभी शस्त्र गौण, महत्त्वहीन एवं राजनैतिक प्रभावों के महत्त्व से मुक्त हो जाएं।'

जब आचार्यश्री ने अपना सन्देश समाप्त किया, कक्ष में सन्नाटा पसर गया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानों संपूर्ण प्रकृति भी इस सन्देश से सहमत हो। अपनी जिन्दगी में पहली बार मैंने अपने आप को विचलित पाया। तब से आज तक आचार्यश्री का वह सन्देश मेरे पथ प्रदर्शक के रूप में है और उस सन्देश ने मेरे जीवन को एक नया अर्थ एवं दिशा प्रदान की है।'

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा भावपूर्ण श्रद्धाभिव्यक्ति

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण अपनी लगभग दो वर्ष की शासना में एक तेजस्वी और वर्चस्वी आचार्य के रूप में ख्यापित हुए हैं। आपका प्रभावी वैदुष्य, गाम्भीर्यजनित गुरुता, उदात्त चिन्तन और समन्वयपरक दृष्टि आपको जैन शासन के प्रभावक आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित करती है। धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक और राजनैतिक क्षेत्र की शीर्ष संस्थाओं और व्यक्तियों द्वारा समय-समय पर आपके प्रति श्रद्धा, आस्था और सम्मान के स्वर मुखरित होते रहे हैं। इस वर्ष के प्रारंभ में भारत जैन महामण्डल की टीम ने उपस्थित होकर श्रीचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए थे। उसी क्रम में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आर.के.जैन ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार पत्र के माध्यम से व्यक्त किए हैं। प्रस्तुत है विनयभाव से युक्त उस पत्र के कुछ अंश--

परमपूज्य आचार्यश्री !

सादर वंदना- त्रिबार नमोस्तु।

भारत की जैन तीर्थ विरासत से जुड़ी १०९ साल पुरानी संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में आपका अभिनंदन और गुणानुवाद करना मेरा अप्रतिम सौभाग्य है। मैं और संपूर्ण तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार यह मानता है कि सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की पवित्र निर्मल परंपरा के संवाहक सूर्यकोटि समप्रभः स्वरूप साधक, एकान्त, एकाग्र और संयमशील जीवन की मानवीय प्रतीति, संकल्पशील वैरागी तपस्वी, तपःपूत तेरापंथ के आचार्यों की जीवंत परंपरा के महान अनुरागी और समर्पित भक्त, महान कर्मयोगी आचार्य महाश्रमणजी महाराज अजनाभखंड की गौरवशाली ऋषि परंपरा के एक ऐसे धर्मप्राण चिंतक एवं साधक हैं, जिनके अथाह अपार वीतराग साधना-रत्नाकर में अतीत का समाकलन, वर्तमान का गहन अनुभव और भविष्य समुन्नयन का विविधतापूर्ण वैभव सदैव ही वस्तु-स्वभावी स्वाभाविकता में परिलक्षित हुआ है। आप निश्चित रूप से एक मुक्त साधक हैं, एक मुक्ति-साधक हैं और इन सबसे आगे बढ़कर हैं एक ऐसी समन्वयी मानवात्मा, जिसके अन्तस में होता है अध्यात्म, विज्ञान और कला का अपूर्व और अनूठा संगम एक अद्वितीय सर्जन और अद्‌भुत समवाय एकांतिकता का अनेकांतिकता में। हे पूज्यपाद! आपके उदार और उदात्त चिंतन के प्रकर्ष से संपूर्ण श्रमण चिंतन को एक नई विवति प्राप्त हुई है, जो अनूठी है, अनुपम है और है अद्वितीय भी।

परमपूज्य आचार्यश्री के आविर्भाव एवं अमृत महोत्सव के पुण्य प्रसंग पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के माध्यम से हम सब भारत के जैन जन भावना भाते हैं कि परमपूज्य आचार्यश्री की

भावप्रवणता, सहजता, करुणाशीलता, पारदर्शिता और वात्सल्यता के समेकित बिम्ब जनकल्याण के असंख्य दीपों को सदैव दीपित करते रहें और आपका साधनामयी तेजस्वी जीवन हमें युगों-युगों तक आत्मचिंतन के मर्म के संस्पर्श-मंत्रों से ऊर्जस्वित करता रहे। इन्हीं मंगलभावों के साथ आपके पाद-पद्मों में हमारी विनयपूर्वक प्रार्थना है कि हमें जैन विरासत के संरक्षण, संवर्द्धन और विकास हेतु अपेक्षित दिशाबोध देकर कृतार्थ करें। हमारी अभिलाषा है कि आपकी पावन सन्निधि में हम एक कार्यक्रम आयोजित कर आपसे सम्यक् संबोधि प्राप्त करें, युगप्रधान आचार्य के पावन चरणों में हम अपनी श्रद्धाभिषिक प्रणतियां अर्पित करें तथा समन्वित जैन इयत्ता के रेखांकन का प्रयास भी कर सकें।

आपकी आज्ञा और दृष्टि के अनुसार आपकी पावन सन्निधि में तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार के पदाधिकारी एवं दिगम्बर जैन समाज के गण्यमान सदस्य उपस्थित होकर आपकी सेवा में अपने श्रद्धा-पुष्प अर्पित कर पुण्य अर्जन का भाव रखते हैं और एक सार्थक सर्जन-प्रेरक संवाद के आविर्भूत होने की भाव-अनुभूति से प्रमुदित भी हो रहे हैं।

चरण-चंचरीक
आर.के.जैन

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह : निर्धारित परियोजनाएं-४

- गुरुदेव तुलसी के सम्पूर्ण साहित्य (प्रवचन पाथेय के अतिरिक्त) का 'तुलसी वाङ्मय' के अन्तर्गत शृंखलाबद्ध व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण।
- आचार्य तुलसी स्मृति ग्रंथ का निर्माण।
- आचार्य तुलसी जीवनवृत्त का लेखन।
- आचार्य तुलसी के संदर्भ में परिचयात्मक पुस्तक का लेखन।
- 'तुलसी महाकाव्य' का संपादन।
- गुरुदेव तुलसी की चयनित कृतियों का अंग्रेजी में अनुवाद।
- 'तुलसी विचार दर्शन' का अंग्रेजी में अनुवाद।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का समायोजन

आगामी २-८ सितम्बर तक देश भर में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह समायोज्य है। प्रस्तुत सप्ताह के अन्तर्गत आयोज्य कार्यक्रमों के विषय इस प्रकार हैं--

२ सितम्बर	साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस	६ सितम्बर	नशामुक्ति दिवस
३ सितम्बर	जीवन विज्ञान दिवस	७ सितम्बर	अनुशासन दिवस
४ सितम्बर	अणुव्रत प्रेरणा दिवस	८ सितम्बर	अहिंसा दिवस
५ सितम्बर	पर्यावरण शुद्धि दिवस		

अभातेयुप द्वारा संघ प्रभावना का विशिष्ट उपक्रम

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आगामी १७ सितम्बर २०१२ को देश भर में विराट रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह सामाजिक प्रकल्प संघ प्रभावना का एक विशिष्ट उपक्रम सिद्ध हो रहा है। अभातेयुप के संगठन मंत्री एवं इस प्रकल्प के संयोजक श्री राजेश सुराणा ने बताया कि कार्यकर्ताओं से इस उपक्रम की जानकारी प्राप्त कर कांग्रेस महासचिव श्री राहुल गांधी, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, प.बं. की मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी, असम के मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई, कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री जगदीश शेट्‌टर, केन्द्रीय युवा एवं खेलमंत्री श्री अजय माकन, सुप्रसिद्ध क्रिकेटर सचिन तेन्दुलकर, बैडमिंटन

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

खिलाड़ी सायना नेहवाल, बैडमिंटन कोच श्री गोपीचन्द पुलेरा, फिल्म अभिनेता रजनीकान्त, शिवकुमार, सुप्रसिद्ध गायक दलेर मेंहदी आदि अनेक विशिष्ट महानुभावों ने इस तरह के प्रकल्प के आयोजन के प्रति प्रसन्नता व्यक्त की तथा अपनी ओर से यथापेक्षा सहयोग का आश्वासन देते हुए जनता से इस विराट उपक्रम से जुड़ने की अपील की है। सेन्ट्रल रेलवे, विभिन्न एन.जी.ओ. और अनेक अन्य सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों आदि का उत्साहपूर्ण सहयोग इस प्रकल्प को आगे बढ़ाने में सहायक बन रहा है। अभातेयुप की देश भर में फैली शाखाएं इस विराट उपक्रम को विश्व कीर्तिमान तक ले जाने हेतु कटिबद्ध हैं। अभातेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ ने संपूर्ण तेरापंथ समाज से इस प्रकल्प से जुड़ने का आह्वान और अनुरोध किया है। इस संदर्भ में अधिक जानकारी हेतु मोबाइन नं.०९३७६५१३००० पर संपर्क किया जा सकता है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- श्री काशीराम-सूरजदेवी बैद (राजलदेसर-सूरत) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र भेरूंप्रकाश, सुशीलकुमार, सुपौत्र बृजेश, दीपक, प्रतीक बैद द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्री चांदमलजी डूंगरवाल एवं स्व. श्रीमती फूलीबाई डूंगरवाल (सुपुत्र व पुत्रवधू-स्व. रोड़ीदासजी डूंगरवाल, दीवेर-चेन्नई) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र बाबूलाल, प्रवीणकुमार, अरविन्दकुमार, कमलकुमार डूंगरवाल द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती मैनादेवी सेठिया (धर्मपत्नी-स्व.बुद्धमलजी सेठिया, सादुलपुर-गुवाहाटी) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में बनेचन्द हनुमानमल, रतनलाल, विजयसिंह सेठिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती संतोषदेवी (पुत्रवधू-स्व. उगमचन्दजी, धर्मपत्नी-श्री संतोषकुमार भरूंट, कुचेरा-बेलडांगा) के मासखमण तप के उपलक्ष्य में श्रीमती कमलादेवी, विनोदकुमार, सुनीतादेवी, सारिका, सौरभ, विनीता, सिद्धार्थ भरूंट द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती झमकूदेवी बैद (धर्मपत्नी-स्व. श्रीचन्दजी बैद, राजलदेसर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र भंवरलाल, जवरलाल बैद, टाटानगर (झारखंड) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. मदनलालजी सामसुखा (सुपुत्र-स्व. सालमचन्दजी सामसुखा, राजगढ़) की १२वीं पुण्यतिथि (१६ अगस्त) पर उनके सुपुत्र दुलीचन्द, शोभाचन्द, गणेशमल, भूपेन्द्रकुमार सामसुखा, राजगढ़-कोलकाता-मदुरै-तिरुपुर द्वारा प्रदत्त।

साध्वी वैराग्यश्रीजी द्वारा अनशन का स्वीकरण

१६ अगस्त। जसोल में परम पावन आचार्यप्रवर ने साध्वी वैराग्यश्रीजी (टमकोर) की प्रबल भावना पर उन्हें तिविहार संलेखना के आठवें दिन तिविहार अनशन का प्रत्याख्यान कराया है। विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

पत्रा व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,
पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : १८-८-२०१२

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**